aurora™
TEMPLE OF LEARNING

HOLISTIC DEVELOPMENT THROUGH LANGUAGE AND LITERATURE

Editors

Dr. Viswanadham Bulusu

Dr. Padmaja K

Aurora's Degree & PG College

(Accredited by NAAC with "B++" Grade)

Chikkadpally Hyderabad - 500020

Tel : 040 27662668 URL : www.adc.edu.in

Information contained in this work has been obtained from the scholars who presented their papers. The organizers, publishers are herein not responsible for any errors, and the authors shall be responsible for any errors. This work is published with the understanding of the organizers and publishers in providing information.

All rights are reserved. This book or parts therefore may not be reproduced in any form or by any means, electronic or mechanical including photocopying, recording or an information storage and retrieved system now known or to be invented without permission from copyright owners.

"Two Days National Conference on Holistic Development through Language and Literature"

First Edition : 2020

Copyright © **Dr. Viswanadham Bulusu and Dr. Padmaja K**

ISBN : 978-93-85132-93-3

Vaagdevi Publishers
H.No. 2-2-1167/2H, Near Railway Bridge, Tilaknagar, Nallakunta, Hyderabad - 500044.
Ph: 9849465291

Aurora's Degree & PG College
(Accredited by NAAC with "B++" Grade)
Chikkadpally, Hyderabad -500020
Tel: 040 2766 2668 URL: www.adc.edu.in

S.No	Name Of Presentation	Page No
11.	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला-सामाजिक कल्याण के आकांक्षी	266 - 268 डॉ. अरूण हेरेमत
12.	साहित्य और जीवन	269 - 270 टी. हेमलता
13.	मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य में जीवन मूल्य	271 - 273 बी. तीरूमला देवी
14.	मानव जीवन का आध्यात्मिक विकास	274 - 275 के. माधुरी
15.	मानवतावादी संघर्ष की कथा : लज्जा	276 - 277 कल्पना दासरी
16.	व्यक्तित्व विकास में प्राचीन हिन्दी काव्य का योगदान	278 - 280 श्रीमती हरवंस कौर
17.	भाषा और साहित्य का समग्र विकास	281 - 284 बबीता कुमारी, शोधार्थी
18.	देश को समृद्ध, सफल एवं विकासशील राष्ट्र बनाने में व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण स्थान	285 - 286 दीपा कल्याणकर
19.	भारतीय संस्कृति और नारीवाद	287 - 288 L.Kranthi Raj
20.	प्रसाद के काव्य में सौन्दर्य का स्वरूप	289 - 292 चिराग राजा
21.	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष में भारतीय संस्कृति	293 - 294 एम्. महेश्वरि
22.	व्यक्तित्व विकास के सन्दर्भ में दिव्या उपन्यास	295 - 297 सरस्वती कुमारी
23.	चरित्र निर्माण	298 - 300 शेख महबूब रमजान,
24.	भाषा और साहित्य द्वारा जीवन मूल्यों का विकास	301 - 303 B. Arundhati
25.	साकेत में उर्मिला का चरित्र-निर्माण	304 - 306 श्रुति ओझा
26.	साहित्य में प्रकृति सौंदर्य	307 - 308 आकाश एम्

11. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला-सामाजिक कल्याण के आकांक्षी

डॉ. अरूण हेरेमत,
विभाग अध्यक्ष,
एल. वी. डी. कॉलेज,
रायपूर, कर्नाटक राज्य,
दूरभाषा: 08277622133

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला छायावाद के प्रमुख कवि और समर्थक, प्रगतिवाद के प्रवर्तक, निर्भीक आलोचक तथा अपने युग के सबसे अधिक विद्रोही साहित्यकार थे। उन्होंने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व के द्वारा आधुनिक हिन्दी कविता के विकास में विशेष याग दिया था। उन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वासों एवं रूढ़ियों का खण्डन कर तथा छंद के बंधन तोड़कर मुक्तक शैली में कविताओ की रचना की। अपनी रचनाओं में नयी भाषा, नयी भाव तथा नयी प्रयोग भ रकर आपने "महाप्राण निराला" की उपाधि प्राप्त की। वे अपने परिवेश की चुनौतियों पर निरंतर चित्र को केन्द्रित करते थे।

उनकी रचनाओं में मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पण स्पष्ट परिलक्षित होता था। सामाजिक कल्याण के लिए आजीवन प्रतिबद्ध रहे। "निराला" अपने काव्यों में विषमता और संत्रास से पैदा हुई वेदना को व्यक्त करते रहे। उनकी "भिक्षुक" कविता का एक अंश- पेट पीठ मिलकर दोनों हैं एक चल रहा लकुटिया टेक मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को मुँह फटी पुरानी झाोली को फैलाता पछताता पथ पर आता।

दरिद्रता से ध्वस्त समाज का यह करूण किन्तु यथार्थ चेहरा है। समाज में व्याप्त दासवाद की प्रवृति से जातिवादी हालाहलवाद से निराला का मन अधीर रहता है। ..... मैं भी होता/यदि राजपुत्र, मैं क्यों ने सदा कलंक ढोता/ये होते, जितने विद्याभर-मेरे अनुचर/..... पैसे में दस राष्ट्रीय गीत रचनका उन पर/कुछ लोग बेचते गा-गा गार्दभ मर्दन स्वर...../ (अनामिका)

निराला के समक्ष फ्रांसीसी राज्यक्रांति, रूसी क्रांतियाँ तथा भारतीय स्वाधीनता संग्राम की क्रांतिकारी परंपराएँ हैं और इन्हीं विचारधाराओं के भीतर से "जागो फिर एक बार", "विधवा", "वह तोड़ती पत्थर", "रानी और कानी" तथा "कुकुरमुत्ता" जैसी व्यंग्य कविताएँ फूटती हैं। "भारत की विधवा" सबसे बड़ी दुःखिनी है। दुःखी निराला "विधवा" में "वह टूटे तरू की छोटी

लता सी दीन दलित भारत की विधवा है।" के प्रति संवेदनशील हैं। निराला साम्यवादी दृष्टि से वर्गहीन, शोषण विहीन नये समाज की रचना करना चाहते हैं, जिसमें "सर्वे भवन्तु सुखिनः" की कामना हो तथा भावी मानवता और पूर्ण संस्कृति की रूपरेखा निर्देशित हो। वे युगीन प्रभावों से प्रभावित होकर शोषित जन के पक्ष में लोक क्रांति को समाज की कामना को युगीन वाणी मानते हैं।

उनकी सारी मेधा समाज के अवसरवादी भ्रष्ट तंत्र, धनलोलुप पूँजीवादी चरित्र को नंगा करने में लगी है। उनकी भिक्षुक, विधवा, दान, तोड़ती पत्थर वे किसान की नई बहू की आँखें, कुकुरमुत्ता, चूँकि यहाँ दाना है, ऊँट-बैल, महकी जैसी रचनाओं में वे निरंतर सामाजिक विद्रूपताओं का खण्डन करते हैं और पूरी निर्भीकता के साथ। निराला जन-जन के दर्द को गाँव के मन से समझ रहें हैं, समझा रहे हैं। सामाजिक स्थितियों विषमताओं को उन्होंने वाणी देकर कहा-गाँव के अधिक जन कुली या किसान हैं। सामाजिक कल्याण के लिए आजीवन प्रतिबद्ध रहे निराला अपनी क विताओं में विषमता और संत्रास से पैदा हुई वेदना को व्यक्त करते रहे- गुरू हथोड़ा हाथ करती बार-बार प्रहार सामने तरू मालिका अट्टलिका प्राकार (तोड़ती पत्थर)

निराला के लिए वर्ग भेद मिटाना और समाज में समता लाना अधिक महत्वपूर्ण है। वे साम्यवादी व्यवस्था के पोषक हैं और उसीको समाज में स्थापित कर गीरब-अमीर में भेद मिटाना चाहते हैं। निराला का विद्रोही मन समाज में व्याप्त विसंगति, अन्याय, अत्याचार, अधर्म, दुःख, दैन्य आदि को देखकर भड़क उठता है। हाथ फैलानेवाले "भिक्षुक" की लाचारी से उनका संवेदनशील मन तड़प उठता है- ठहरो अहो मेरे हृदय में है अमृत मैं सींच दूँगा अभिमन्यु जैसे हो सकोगे तुम तुम्हारे दुःख में अपने हृदय मैं सींच लूँगा।

यही नहीं, वे दासता से बेहद घृणा करते हैं। वर्तमान व्यवस्था में आलूम परिवर्तन के आकांक्षी हैं। समाज का नये सिरे से निर्माण करने के पक्षधर हैं। आज अमीरों की हवेली किसानों की होगी पाठशाला धोबी, पासी, चमार, तेली खोलेंगे अंधेरे का ताला।

पूँजीपतियों के निर्मय शोषण का वे डटकर विरोध करते हैं। पूँजीपति की तुलना वे गुलाब से करते हुए "कुकुरमुत्ता" को सर्वहार वर्ग-सदृश मानते हैं-अब सुन बे गुलाब भूल मत जो पायी खुशबू रंगों आब खून चूसा खाद का तूने अष्टि डाल पर इतराता है कैपिटलिस्ट।

ISBN 978-93-85132-93-3

उनकी रचनाओं में जमीदारों के निर्मम अत्याचारों से लड़नेवाले किसानों का चित्रण है। साथ ही समाज के सबसे निचले स्तर पर मानवता के दर्शन हैं। निराला की सक्रिय सहानुभूति दुःख सहनेवालों के साथ है, उनका आक्रोश दुःखियों को सतानेवालों पर है वे अन्याय का सक्रिय प्रतिरोध करने का आह्नान देते हैं। ऐसा लगता है कि उनका काव्य तो परहिताय ही है। उनका जीवन भी परहिताय हो गया है। वे जन हित के लिए जीने-मरनेवाले कवि थे।

***

VAAGDEVI
Publishers

ISBN No. 978-93-85132-93-3
978-93-85132-93-3